श्रीश्रीमाँ के साथ कई तीर्थों में सत्संग (इं २००९)

कायासिद्ध महात्मा टॉटवाले बाबा के सान्निध्य में :–

श्रीश्रीमाँ के साथ हम सभी वाराणसी गए थे। वहाँ के आश्रम पर 'बानलिंग शिव' प्रतिष्ठित हैं, जिसका माँ प्रतिवर्ष स्वहस्त पूजन करती हैं। वाराणसी की पूजा सम्पन्न कर हम सभी हरिद्वार में स्थित पुष्कर के टॉट बाबा के गुरुदेव टॉट वाले बाबा (१२४ वर्षिय) के दर्शनार्थ रवाना हुए। हरिद्वार स्टेशन पर स्वयं रामकृपालुजी महाराज आकर श्रीश्रीमाँ को अपने ऋषिकेश के गंगाकिनारे स्थित 'भरत मिलाप' आश्रम ले गए। रामकृपालुजी महाराज ने कहा ''माँ, आपको माँ गंगा की गोद में रखूँगा।''आश्रम में पहुंचने पर हमने पाया कि सचमें हम माँ गंगा की गोद में रहेंगे। आश्रम का शान्त एवं मनोहर परिवेश। पार्शवर्त्ती प्राकृतिक दृश्य भी अतीव सुन्दर था।

हरिद्वार स्टेशन पर संतानों के संग श्रीश्रीमाँ

सुबह के नाश्ते के उपरांत रामकृपालुजी महाराज नॉव में गंगा के पार पहाड़ के मध्यस्थित उनकी साधना की गुफा दिखाने ले गए और गंगा विहार भी कराया। श्रीश्रीमाँ गंगा विहार के लिए नहीं गयी, आश्रम के भोजनकक्ष से हमारे गंगा विहार का अवलोकन कर रहीं थी। दोपहर के भोजनोपरांत हरिद्वार के टॉट वाले बाबा के दर्शनार्थ हम रवाना हुए। प्रथान के पूर्व श्रीश्रीमाँ ने पार्थदा को पुष्कर के टॉट बाबा को फोनपर सूचित करने को कहा कि, हम उनके श्रीगुरु देव के दर्शन के लिए रवाना हो रहें हैं। पार्थदा ने वह सूचित किया। ऋषिकेश से हरिद्वार का अधिकांश रास्ता तय कर चुके थे, तभी पुष्कर के टॉट बाबा ने फोन कर सूचित किया कि उनके गुरुदेव को गुजरात के अम्बाजी में देखा गया था, इसलिए हरिद्वार में उनका दर्शन नहीं भी हो सकता है। पार्थदा ने माँ को जब यह बताया तो माँ ने कहा,''वह कायासिद्ध महात्मा हैं, वह किसी मुहुर्त जहाँ इच्छा आ-जा सकते हैं। गायत्री महायज्ञ पर उन्होंने मुझे आशीर्वाद भेजा था, तो उनके साथ मेरा साक्षात्कार जरूर होगा।'' पार्थदा ने यह बात फोन कर टॉट बाबा को बताई, तब बाबा ने कहा 'ऐसा हो भी सकता है, आप जाकर देखो।''

गंगाविहार कराते हुये
रामकृपालुजी महाराज

हरिद्वार पहुंचकर थोड़ी खोज की तो गंगा के तट पर स्थित १२४ वर्षीय टॉट वाले बाबा के आश्रम पहुंचे। आश्रम की दीवार नीची थी। पार्थदा ने झांककर देखा, और माँ को कहा–'माँ, मैने टॉट पहने एक व्यक्ति को घुमते देखा। बाबा हैं, हमें मिल गए।' श्रीश्रीमाँ और रामकृपालुजी आगे-आगे और हमसारे माँ की किष्किंधा पार्टी पीछे-पीछे चल रहे थे,

टाट वाले बाबा और रामकृपालुजी महाराज के साथ श्रीश्रीमाँ

आश्रम के छोटे द्वार से सीधे प्रवेश करते ही श्रीश्रीमाँ ने देखा टॉट वाले बाबा खड़े है और श्रीश्रीमाँ की ओर देख मधुर प्रसन्न भाव से मुस्करा रहे थे। हम सभी ने जाकर उन्हें प्रणाम किया, साथ-साथ बाबा ने वात्सल्य भाव से हमारे गालों का चुंबन लिया। श्रीश्रीमाँ ने जब बाबा को प्रणाम करना चाहा तो उन्होंने माँ को अभिनव ढंग से श्रीमाँ का आदर सम्मान किया। अब बाबा श्रीमाँ को आश्रम दिखाने अंदर ले गये। मंदिर के अंदर श्रीरामसीता की मूर्त्ति, शिवलिंग व टॉट वाले बाबा के गुरुदेव मेहेर बाबा का श्रीविग्रह प्रतिष्ठित था। रामायण के प्राचीनयुग का रामसेतु के पत्थर का दर्शन भी वहां हुआ। बाबा ने कहा– 'इस

पत्थर में भगवान श्रीराम का स्पर्श है। यह पत्थर जल में डुबता नहीं है।' टॉट वाले बाबा मौन रहते हैं; कभी इशारों में या स्लेट पर लिखकर बात करते हैं। इसके बाद हमें बैठने के लिए चटाई और स्वयं एक चौकी पर जा बैठे और परस्पर परिचय प्राप्त करने लगे। उन्होंने स्लेट पर लिख दिया–' तुम सब के प्रेम से मैं खुश हूँ।' तत्पश्चात् वे अचानक श्रीश्रीमाँ और गुरुभ्राता वरुणदा को बुलाकर आश्रम के पीछे एक भाग में ले गये। हम सभी माँ के पिछे हो लिए। देखा कि एक कुएँ के निकट खड़े टॉट वाले बाबा वरुणदा की सहायता से कुएँ का पानी श्रीश्रीमाँ को पिलाने के उद्देश्य से निकाल रहे हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उस कुएँ का जल बहुत दिनों से व्यवहार नहीं किया गया है, क्योंकि लोहे की बाल्टी के प्रहार करने से उसपर जमी मोटी परत को भेद कर वह गभीर में डुबाकर टॉट वाले बाबा ने पानी भरा। वरुणदा के हाथ में उस बालटि को दिया श्रीश्रीमाँ को जल पान कराने के लिए। श्रीश्रीमाँ के सह हमसभी ने उस कुएँ का जल पान किया। उस जल को पान करते ही जैसे मन तृप्त हो गया, अंतर शांत व शीतल हो गया। टॉट वाले बाबा ने वह जल हमपर छिड़का। फिर कुएँ के पास एक साइनबोर्ड दृष्टिगोचर हुआ जिसपर लिखा था–'जो इस कुएँ का पवित्र जल पान करेगा उसके अन्तर में प्रेम व भक्ति का संचार होगा।'' टॉट वाले बाबा ने बताया कि इसका खनन उन्होंने निज हस्त से किया है और यह भी बताया कि उनके गुरु के इस आश्रम का उन्होंने अकेले निज हस्त से निर्माण किया है। इसके उपरांत श्रीश्रीमाँ और स्वामी सदाशिवानन्द को लेकर बाबा ने अपना तपस्या स्थल दिखाया। वह भी एक कुएँ के समान ८/९ फिट गहरी जगह थी। हम सभी ने झुक कर देखा कि बाबा का आसन बिछा हुआ है। ऊपर के कक्ष में ताला लगा हुआ था, जिसकी चाबी बाबा के कमर से घुटने तक लम्बी एक मोटी डोरी में बंधी थी। यह सब देखकर जब लौट रहे थे, तभी किसी का पैर एक फूल के पेड़ पर पड़ा जिसे देखकर बाबा ने कहा–''पेड़ को कष्ट होगा, उसपर पैर ना दे।'' इसके बाद हम फिर वहाँ आकर बैठे। टाट बाबा ने हमें प्रसाद में मुड़ी दी। संध्या हो चली थी; बाबा ने अपने आश्रम के साइनबोर्ड दिखाये जिसपर उनकी वाणी लिपिबद्ध थी। हमसब बाबा को प्रणाम कर अपने गंतव्य की ओर अग्रसर हुए। सबसे अन्त में श्रीश्रीमाँ ने जब बाबा को प्रणाम किया तब उन्होंने माँ का अभिनव रुप से आदर सम्मान किया। तब श्रीश्रीमाँ ने बाबा को अतिकरुण भाव से कहा–'बाबा, मुझे आशिर्वाद दें की मैं फिर कभी सद्गुरु रूप में इस धरा पर न आऊँ।' टॉट वाले बाबा श्रीश्रीमाँ की ओर देखते हुए,तर्जनी हिलाकर बोले–''यह नहीं होगा।'' ––टॉट वाले बाबा श्रीश्रीमाँ को गाड़ी तक पहुंचाने आये।

अगले दिन हम हरकी-पौड़ी का पुल पार कर श्रीश्रीमाँ के साथ बाजार गये और वापसी में टॉट वाले बाबा के आश्रम में गये। उस दिन श्रीश्रीमाँ को पाकर बाबा बहुत खुश हुए। हम सभी को लेकर बैठाये, एवं खाने के लिए मुड़ी दी। श्रीश्रीमाँ की कुएँ का पानी पीने की इच्छा थी, इसलिए बाबा ने उन्हें लाकर पान कराया। खुशी में विभोर होकर एकतारा लेकर बजाते हुए चौकी पर बैठकर मन ही मन गाने लगे। इस बीच एक व्यक्ति के फोटो खिंचने के प्रयास ने उनके भाव को नष्ट कर दिया। तब डफली हाथ में लेकर सुन्दर छन्द में बजाने लगे, तभी श्रीश्रीमाँ ने भजन की दो पंक्तियाँ गायी। इससे बाबा बहुत खुश हुए। आज हमारी उपस्थिति से बाबा इतने खुश थे की हमें जाने की अनुमति नहीं दी। इधर संध्या ढलते देख, श्रीश्रीमाँ ने प्रत्यागमन की अनुमति मांगी तब बाबा ने इशारों में कहा–''ओ, तुम्हे तो बहुत दूर जाना है।'' पॉकेट से एक mobile निकाल कर श्रीश्रीमाँ को दिखाया, वरुणदा ने उसका नम्बर ले लिया। बाबा ने कहा संध्या के ५ बजे फोन करने पर उनसे वार्ता हो सकेगी। वापसी के समय फिर से बाबा ने अभिनव भाव से श्रीश्रीमाँ का आदर किया एवं हम सभी को आशीर्वाद किया। वापसी के पथ पर गाड़ी में माँ ने बताया, ''मानस सरोवर में इन्होंने बहुत दिन तपस्या की है। कायासिद्ध महात्मा इस युग में विरल हैं।''

डफली बजाते हुए टाट वाले बाबा

<u>कुंजापुरी के प्राचीन सतीपीठ का दर्शन</u> :-

श्रीरामकृपालुजी महाराज की परम उदारता एवं आन्तरिक स्नेह में हमारी ऋषिकेश की तीन दिवसीय यात्रा हुई। इसके मध्य कृपालुजी महाराज के साथ श्रीश्रीमाँ के साथ हम एकदिन महामाया के ५१ पीठों में एक अन्यतम

शक्तिपीठ ''कुंजापुरी'' माँ के दर्शन को गये थे। कुंजापुरी माँ का मंदिर प्राय: ७ हजार फिट की ऊँचाई पर अवस्थित है। कुंजापुरी में सती का पयोधर (स्तन युगल का एक) गिरा था। श्रीश्रीमाँ ने उस मंदिर में दर्शन व पूजा की। पूजन के समय श्रीश्रीमाँ को गभीर आत्मस्थ देखा गया। जब पुजारीजी माता सती के देहत्याग का प्रसंग बता रहे थे, तब मैंने देखा कि माँ की आँखे बंद थी, देह निश्चल। पूजा समाप्त होने पर श्रीश्रीमाँ ने बताया–''यहाँ भी वही एक ज्योति। विन्ध्याचल की माँ विन्ध्यवासिनी के मंदिर में जैसी अनुभूति हुई थी, कालीघाट में मुझे जो अनुभूति हुई थी, यहाँ की 'ज्योति' भी शाश्वत एक है; मानो उज्ज्वल प्रदीप का आलोक आकर मुझमे प्रवेश कर गया एवं मेरे अन्तर से एक ज्योति निर्गत होकर माँ में समाहित हो गयी।'' मंदिर के बाहर प्रांगण से वर्फावृत हिमालय पर्वत श्रृंखला दृष्टिगोचर हुआ। कुंजापुरी तीर्थ का पार्श्ववर्ती क्षेत्र अति मनोरम था, जो चारों दिशाओं से पहाड़ो से घिरा था। गाड़ी के गंतव्य स्थल से मंदिर पहुंचने के लिए ३५० सीढ़ियाँ अतिक्रम करनी पडती हैं। श्रीरामकृपालुजी ने हिमालय के गौमुख में साधना की है। उनके पदयुगल में अभिनव काष्ठ-पादुका शोभा पाती है एवं उस अभिनव काष्ठ-पादुका को पहन द्रुतगति से वे सीढ़ियाँ चढ़ गये। परंतु हमारी श्रीश्रीमाँ को चढ़ने में थोड़ा कष्ट हुआ, श्रीश्रीमाँ बीच-बीच में विश्राम लेते हुए चढ़ी।

कुंजापुरी का शक्तिपीठ

<u>योगसिद्ध महात्मा स्वामी प्रकाशानन्दजी के सान्निध्य में:-</u>

तीसरे दिन हमारा रात में वापसी का कार्यक्रम था। ब्रह्ममुहुर्त के प्रथम प्रहर में श्रीश्रीमाँ ने रामकृपालुजी को एवं उनके भक्त श्रीदेवरामजी को साधन प्रदान किया। सुबह खान-पान के बाद श्रीरामकृपालुजी, श्रीश्रीमाँ एवं हमें लेकर ऋषिकेश के 'मोक्षधाम' आश्रम में ११७ वर्षिय योगीश्वर माहात्मा स्वामी प्रकाशानन्द महाराज के दर्शनार्थ ले गये। स्वामी प्रकाशानन्दजी एक अपूर्व सिद्ध महात्मा हैं, उनका दर्शन कर हमें बहुत अच्छा लगा। श्रीप्रभातगिरि महाराज, श्रीप्रकाशानन्दजी के सद्गुरू देव हैं; वे केदारनाथ के गहन गुफा में रहते थे। ई० १९१०, में १६ वर्ष की उम्र में श्रीप्रकाशानन्दजी को केदारनाथ में दीक्षा प्राप्त हुई और वहाँ

महात्मा श्रीश्रीप्रकाशानन्द महाराज

कि अन्यतम गुफा में अनेक वर्षों तक तपोरत थे। प्रकाशानन्दजी ने अपना जीवन वृतान्त स्वयं व्यक्त किया। उन्होंने श्रीश्रीमाँ के प्रति अभूतपूर्व सम्मान व श्रद्धा का प्रदर्शन करते हुए, आद्याशक्ति जगदम्बा स्वरुप में आवाहन किया एवं श्रीश्रीदुर्गा की स्तवस्तुति और दशमहाविद्या स्तवधारा द्वारा पूजन किया। प्रकाशानन्दजी ने श्रीश्रीमाँ को बताया कि कल ही उनके छ: वर्ष व्यापी, ६४०० कुमारी भोजन का संकल्प पूर्ण हुआ, और आज उन्होंने श्रीश्रीमाँ का दर्शन पाकर स्वयं को धन्य समझा। उन्होंने हमसभी से कहा, ''हम हुए मुनि ऋषि और 'माँ' हुई साक्षात भगवती। 'माँ' हमारे पास रहीं तो मनुष्य को हमारा प्रयोजन नहीं है, जब यह नहीं रहतीं, तभी मनुष्य हमारे पास आने का प्रयोजन महसूस करता है। यदि तुम सब मेरे समक्ष बैठकर ध्यान

महात्मा श्रीश्रीप्रकाशानन्द महाराज के संग
श्रीश्रीमाँ की भेट

करो, तो मैं तुम सभी को भगवान् का रूप समझूंगा, क्योंकि तुमसब साक्षात भगवती की सन्तान हो। तुम्हारे जैसा सौभाग्य मेरा कहाँ, क्योंकि तुमसब सर्वसमय माँ भगवती का सान्निध्य लाभ कर रहे हो।''

–मातृचरणाश्रित श्रीसुब्रत कुमार पांडा